23 अगस्त 2016 को केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड के नए भवन के उद्घाटन के अवसर पर माननीय अध्यक्ष का भाषण

1. नवनिर्मित श्रमिक शिक्षा भवन के उद्घाटन समारोह के अवसर पर आप सबके बीच आकर मुझे बहुत खुशी हो रही है। इसके साथ ही मुझे यह जानकर भी बहुत प्रसन्नता हुई है कि केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड का नाम बदलकर **''दत्तोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड''** कर दिया गया है।

2. जैसा कि हम सब जानते हैं, यह बोर्ड 1958 से ही सरकार की योजनाओं, सामाजिक–आर्थिक मुद्दों और संगठित, असंगठित और ग्रामीण श्रमिकों के बीच औद्योगिक संबंधों के बारे में जागरूकता के लिए कार्य करता आया है। श्रम और रोजगार मंत्रालय के इतने महत्वपूर्ण समारोह के अवसर पर मुझे यहां आमंत्रित करने के लिए मैं, माननीय मंत्री जी और बोर्ड को धन्यवाद देती हूं और उनके द्वारा की गई पहल की सराहना करती हूं। मैं आशा करती हूं कि इससे श्रमिकों की जरूरतों को पूरा करने में मदद मिलेगी।

3. इस अवसर पर हमारे आदरणीय नेता श्री दत्तोपंत बापूराव ठेंगड़ी की संकल्पना और आदर्शों को याद करना उपयुक्त होगा, जिनके नाम पर इस बोर्ड का नाम रखा गया है। श्री ठेंगड़ी बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी थे। वह एक योग्य सांसद, मजदूर नेता, कुशल संगठक और एक महान देशभक्त थे, जो स्वदेशी विचारधारा से जुड़े रहे। हम सब जानते हैं कि उन्होंने श्रमिक वर्ग के हितों का समर्थन किया तथा अन्य संस्थाओं के साथ–साथ सन् 1955 में भारतीय मजदूर संघ, सन् 1979 में भारतीय किसान संघ तथा सन् 1991 में स्वदेशी जागरण मंच की स्थापना की। सांसद के रूप में वह लगातार दो बार राज्य सभा के सदस्य रहे। राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड का पुनः नामकरण किया जाना उनकी संकल्पना और आदर्शों के प्रति उपयुक्त श्रद्धांजलि है। आज दत्तोपंत ठेंगड़ी जी के विचार, जो उन्होंने अपनी पुस्तक The Third Way में रखे थे, हमें भविष्य की राह दिखाते हैं। उन्होंने कहा है कि किसी भी Economic Activity के लिए Education, Ecology, Economics & Ethics इन चारों का समावेश नितांत आवश्यक है, तभी हम एक सर्वांगीण विकास के सपने को साकार कर सकेंगे।

4. मुझे यह जानकर खुशी हुई है कि राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड श्रमिकों को उनके चुने हुए क्षेत्र में जानकारी प्रदान करने और उन्हें प्रेरित करने के लिए प्रशिक्षण देता है। इसके साथ ही, यह उत्पादन एवं सेवा क्षेत्र में कार्यरत सभी श्रमिकों में समावेशी विकास, सद्भाव और स्थायित्व को बढ़ावा देने के लिए प्रयास कर रहा है। यह बहुत महान कार्य है, जिससे समाज में बदलाव और विकास होगा। यदि हम Third Way के संदर्भ में विचार करें तो पाएंगे कि श्रमिक शिक्षा पर दत्तोपंत जी की सोच वास्तव में हमारी शिक्षा व्यवस्था पर व्यापक सोच थी।

5. आप जानते हैं कि शिक्षा आधुनिक समाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है तथा श्रमिकों को शिक्षित करने, उन्हें जागरूक बनाने और जानकारी प्राप्त करने में उनकी मदद करने के लिए यह निःसंदेह एक महत्वपूर्ण साधन है। शिक्षा से उनका सशक्तिकरण और विकास होगा जिससे उनका बेहतर जीवन स्तर सुनिश्चित होगा। आज जो हम Skill की बात करते हैं, वास्तव में वह उसी व्यापक शिक्षा व्यवस्था का अंग है।

6. श्रमिकों को दूरगामी महत्व के इन बदलावों की ओर ध्यान देना चाहिए और प्रौद्योगिकी का लाभ उठाकर अधिक कौशलयुक्त बनना चाहिए। उन्हें आधुनिक सूचना और संचार प्रौद्योगिकी को अपनाने की जरूरत है। मैं श्रमिकों से कहना चाहूंगी कि वे इन बदलावों को अपनाकर अधिकारों और जिम्मेदारियों को समझें, इनसे सीखें और शिक्षा प्राप्त करें जिससे उनके जीवन में दूरगामी और सकारात्मक परिवर्तन आएंगे। मैं आशा करती हूं कि ''दतोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड'' इस काम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा, जैसा कि वह पहले भी निभाता आया है।

7. यह बड़े संतोष की बात है कि हमारे देश में श्रमिकों के काम के लिए, सुरक्षित और सुखद वातावरण सुनिश्चित करने के लिए श्रम संबंधी अनेक कानून हैं। हमारे संविधान में सभी श्रमिकों को सामाजिक न्याय और अवसर की समानता की गारंटी दी गई है। आज हमारा देश आर्थिक प्रगति और विकास के पथ पर निरंतर आगे बढ़ रहा है। यह आवश्यक है कि हमारा श्रमिक वर्ग विभिन्न कानूनों से लाभान्वित हो और उनके अधिकारों की रक्षा की जाए। अप्रवासी श्रमिकों की स्थिति भी शिक्षा के बगैर नहीं सुधर सकती। उन्हें उनके हितों और अधिकारों के बारे में शिक्षा के

माध्यम से ही जागरूक किया जा सकता है। जैसा कि आप जानते हैं कि श्रम और रोजगार मंत्रालय ने हाल ही में एक सराहनीय पहल की है। अब 10 या उससे ज्यादा लोगों को रोजगार पर रखने वाले सभी संस्थानों में केवल दो बच्चों के जन्म पर प्रसूति अवकाश को 12 हफ्ते से बढ़ाकर 26 हफ्ते किया जा रहा है।

8. श्रम मंत्रालय के अनुसार, लगभग 93 प्रतिशत हिस्सा असंगठित मजदूरों का है जबकि सकल घरेलू उत्पाद में इनका हिस्सा 65 प्रतिशत है। इसके बावजूद, यह न्यूनतम मजदूरी दर से भी कम कीमत पर अपना श्रम बेचने को मजबूर हैं। इनके पास सरकारी योजनाओं के लाभ भी नहीं पहुंच पाते हैं। इसलिए हमें असंगठित क्षेत्र को संगठित क्षेत्र में परिवर्तित करने की सबसे बड़ी जिम्मेदारी है और मेरा मानना है कि शिक्षा एवं कौशल विकास इसमें बहुत ही महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। आधुनिकी प्रौद्योगिकी की वजह से श्रमिकों को शिक्षित होना आवश्यक होता जा रहा है। हमें श्रमिकों की आय और व्यय के अनुपात की विसंगति को समझना होगा और उनके हित के लिए निरंतर कार्य करना होगा। भारत के विकसित राष्ट्र बनने के तेजी से प्रयास में सबसे महत्वपूर्ण भूमिका श्रमिकों की होगी, यह हम सब जानते हैं और श्रम सुधारों पर हमें और भी कार्य करने की आवश्यकता है।

9. मुझे खुशी है कि केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड पिछले कई सालों से इस जिम्मेदारी को बड़ी ही ईमानदारी और नेकनीयती से निभाता आ रहा है और श्रमिक वर्ग को सशक्त बनाने के प्रयास कर रहा है।

10. इन्हीं शब्दों के साथ मैं एक बार फिर माननीय मंत्री श्री बंडारू दत्तात्रेय जी, अध्यक्ष, श्री लक्ष्मा रेड्डी और बोर्ड से जुड़े सभी लोगों को धन्यवाद देती हूं कि उन्होंने मुझे इस नए भवन के उद्घाटन के अवसर पर आमंत्रित किया। मैं ''दत्तोपंत ठेंगड़ी राष्ट्रीय श्रमिक शिक्षा एवं विकास बोर्ड'' के महान उद्देश्यों को पूरा करने की उनकी यात्रा और उनके भावी प्रयासों के लिए शुभकामनाएं देती हूं।

धन्यवाद।